Structural-Functional Approach

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम

* भूमिका
* दृष्टिकोण का अभिप्राय
* विशेषताएँ
* आमण्ड एवं पॉवेल द्वारा प्रतिपादित
* आलोचना

भूमिका :- तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था विश्लेषण का संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम ईस्टन के निवेश-निर्गत विश्लेषण से उत्पन्न असंतोष के कारण अस्तित्व में आया। ईस्टन का निवेश-निर्गत मॉडल सामान्य सिद्धांत निर्माण में तुलनात्मक राजनीति को आगे नहीं बढ़ाया। अतः आमण्ड ने राजनीतिक व्यवस्थाओं की संरचनाओं और प्रकार्यों के रूप में व्याख्या का विचार प्रस्तुत किया।

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक की परिभाषा या अभिप्राय

संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक उपागम इस बात की व्याख्या करता है कि कौन सी संरचना राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत कौन से कार्यों का सम्पादन करती है। यह वस्तुतः व्याख्या और परीक्षण का एक उपकरण है। यह उपागम दो प्रमुख धारणाओं पर केन्द्रित है। ये धारणाएँ हैं - प्रकार्य और संरचना की धारणाएँ।

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण की मूलभूत मान्यता यह है कि मनुष्य सुसंगत ढंग से क्रिया करता है अर्थात् वह अपनी महत्वपूर्ण आवश्यक क्रियाओं को दुहराता रहता है। जब अनुगत क्रियाओं को एक सीमा के बाहर दुहराया जाता है तब इसके परिणामस्वरूप संरचनाओं की उत्पत्ति होती है। उदाहरणस्वरूप, ब्रिटिश संसद एक संरचना है। कुछ संरचनाएँ ऐसी होती हैं जो तब तक अनाम रहती हैं जब तक उन्हें कोई नाम नहीं देता।

कार्य शब्द का व्यवहार भी विभिन्न अर्थों में किया जाता है। कुछ संरचनाओं द्वारा किये गये कार्य बिल्कुल स्पष्ट होते हैं। इसलिए किसी संरचना द्वारा सम्पादित कार्यों को स्पष्ट कार्य (Manifest function) कहा जाता है - जैसे ब्रिटिश संसद का कार्य कानून बनाना है। इसके विपरीत, संरचनाओं के कुछ कार्य स्पष्ट नहीं होते और उनका तब तक पता नहीं चलता जब तक उनकी खोज नहीं की जाती। इन कार्यों को अप्रकट (Latent) कार्य कहा जाता है। इन्हें जानने के लिए कौशल (Skill) की माँग करती है। इसलिए जो समाज वैज्ञानिक संरचनाओं के अप्रकट कार्यों को जितना अधिक उद्घाटित करते हैं वे उतने ही अधिक कुशल माने जाते हैं।

कुछ संरचनाएँ एक समान दिखती हैं और एक समान कार्यों का सम्पादन भी करती हैं। इसके विपरीत कुछ संरचनाएँ

Scanned with CamScanner

एक समान प्रतीत होने के बावजूद भिन्न-भिन्न कार्यों का सम्पादन करती है। उदाहरण के लिए कांग्रेस और भारतीय संसद एक समान होते भी हुए भी दोनों में अन्तर है। अतः संरचनाओं की तुलना एक कठिन कार्य है अतः अभिकर्ता उनके कार्यों से तुलना की जाती है

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम की विशेषताएं

एल्मंड लायल के अनुसार सामान्य व्यवस्था सिद्धांत के फलस्वरूप संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक अध्ययन उपागम अस्तित्व में आया। तुलनात्मक राजनीति में इस उपागम का विशेष रूप से प्रयोग आमण्ड एवं पॉवेल ने किया। किन्तु ईस्टन ने राजनीतिक व्यवस्था को 'निवेश-निर्गत' के रूप में समझने का प्रयास किया जबकि आमण्ड एवं पॉवेल इसे संरचनाओं एवं प्रकार्यों के आधार पर समझते हैं। अतः इसके कुछ भिन्न विशेषताएं हैं राजनीतिक व्यवस्था के तुलना में :—

(1) सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर बल :
ईस्टन की भांति ही आमण्ड भी संरचनाओं और प्रकार्यों को विश्लेषित करने में राजनीतिक व्यवस्था का ही आधार रखता है। उन्होंने उन संरचनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया है जो राजनीतिक व्यवस्थाओं को विशेष प्रकृति प्रदान करती है।

(2) शर्तों का प्रतिपादन : व्यवस्था में संरचनात्मक ~~प्रकार्यात्मक~~ विभिन्नता हो सकती है। अर्थात् किसी राजनीतिक व्यवस्था में प्रकार्यों का सम्पादन 'क' प्रकार की संरचनाओं के द्वारा हो सकता है तो किसी अन्य व्यवस्था में उन्हीं कार्यों का निष्पादन 'ख' प्रकार की संरचना कर सकती है। यहाँ संरचनाओं की समानता मौलिक नहीं है किंतु व्यवस्था में बने रहने के लिए प्रकार्यों का रहना अनिवार्य है।

(3) विविध संरचनाओं में प्रकार्यात्मक निर्भरता : यह उपागम राजनीतिक व्यवस्था में विद्यमान संरचनाओं में अन्तःनिर्भरता की प्रकार्यात्मक आधार पर व्याख्या करता है। अर्थात् यह संरचनाओं की प्रकार्यों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयत्न करता है।

(4) संरचनात्मक प्रतिस्थापना की मान्यता : संरचनात्मक समानता के आधार पर यह स्वीकार किया गया कि परिस्थिति के अनुसार संरचनाओं में हेर-फेर करके उनके स्थान पर नयी प्रकार की संरचनाओं का निर्माण हो सकती है।

(5) प्रकार्यात्मक संरचनाओं की मान्यता :

संरचनाएँ एक साथ अनेक प्रकार्य कर सकती हैं, ऐसा उपागम में नहीं माना गया है। एक ही संरचना एक समय में प्रकार्य और दूसरे समय में निष्कार्य करने की स्थिति में पहुँच सकती है। अतः यह उपागम प्रकार्यों एवं निष्कार्यों को स्वीकार करनेवाला उपागम है।

आमण्ड और पॉवेल द्वारा प्रतिपादित संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम :

संरचनात्मक एवं प्रकार्यात्मक उपागम की दिशा में सबसे अधिक योगदान जी.ए. आमण्ड का है। आमण्ड राज्य व्यवस्था के प्रकार्यात्मक विश्लेषण की तलाश में हैं। आमण्ड का विश्लेषण संरचनात्मक प्रकार्यात्मक विश्लेषण है। इस विश्लेषण पद्धति का सबसे पहले विकास जैविक तथा यांत्रिक विज्ञानों में हुआ। सामाजिक विज्ञानों में अधिप्रयोग सबसे मानव विज्ञान के अध्ययन में अपनाया गया। बाद में इसे परिष्कृत कर पारसन्स तथा मेरियन लेवी ने समाजशास्त्रीय विश्लेषण की एक पद्धति के रूप अपनाया।

इस विश्लेषण पद्धति में यह माना जाता है कि प्रत्येक व्यवस्था में संरचनाएं होती हैं। इन संरचनाओं की पहचान की जा सकती है। इन संरचनाओं के अंग अथवा तत्व व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य करते हैं। व्यवस्था की कार्यक्षमता उसके अंगों की कार्य क्षमता पर टिकी है। संरचना के एक अंग अथवा तत्व की क्रियाएं दूसरे अंग अथवा तत्व पर निर्भर करती हैं। व्यवस्था की संरचनाओं के अंग कार्य की दृष्टि से अन्योन्याश्रित होते हैं। सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं को चाहे किसी भी प्रकार की क्यों न हो, यदि उन्हें क्रियाशील तत्व के रूप में कायम रखना है तो उन्हें एक विशिष्ट प्रकार के कार्य को अवश्य करना पड़ेगा। अतः क्रियाशीलता राजनीतिक व्यवस्थाओं की एक विशेषता है।

आमण्ड की राजनीतिक व्यवस्था विश्लेषण की प्रकृति देन रूपान्तरण प्रक्रिया से संबंधित है। आमण्ड के अभिमत में मांगों की रूपान्तरण प्रक्रिया उतनी सरल नहीं है जितनी कि ईस्टन ने मान ली है। मांगों के रूपान्तरण को आमण्ड ने दो भागों में विभक्त किया है - प्रथम में, मांगों को संशोधित करके रूपान्तरण योग्य बनाया जाता है। इसमें केवल सरकार की संरचनाएं ही सम्मिलित नहीं होती, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से गैर-सरकारी संरचनाएं भी सम्मिलित होती हैं। दूसरे में, मांगों को सत्तात्मक निर्णयों की स्थिति तक पहुंचाने की औपचारिक संरचनाएं सम्मिलित होती हैं। इनमें प्रमुख रूप से शासकीय संरचनाएं शामिल रहती हैं।

आमण्ड के राजनीतिक व्यवस्था के निर्गतों के विवेचन में ईस्टन का मॉडल स्वीकार नहीं किया है। उनके

Scanned with CamScanner

निर्गतों के चार भिन्न प्रकार माने जाते हैं - (1) निष्कर्षणात्मक निर्गत (2) नियामक निर्गत (3) वितरणी निर्गत (4) प्रतीकात्मक निर्गत। निर्गतों में [illegible] का संग्रह [illegible] संयोजित होते हैं। इसके द्वारा मानव व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। प्रतीकात्मक निर्गत मूल्यों की पुष्टि तथा नीतियों और उद्देश्यों की घोषणा से संबंधित होता है।

जिस प्रकार राजनीतिक व्यवस्था आगत को रूपान्तरित करती है तथा पर्यावरण की प्रतिक्रियाओं का उत्तर देती है उसे आमंड रूपान्तरण की प्रक्रिया कहते हैं। राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता इस बात में निहित है कि वह विभिन्न प्रकार के आगत (input) को निर्गत (output) में रूपान्तरित करने की क्षमता रखता है। आगत को निर्गत में रूपान्तरित करने की क्षमता को व्यवस्था की क्षमता कहा जाता है।

संक्षेप में, आमंड के सम्पूर्ण विश्लेषण का निष्कर्ष यह है कि जो राजनीतिक व्यवस्था जितनी विकसित होगी उसकी संरचनाएं भी उतनी ही विशेषीकृत होंगी। आमंड के आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था उस व्यवस्था को कहते हैं जिसकी राजनीतिक संस्कृति विशेषीकृत होती है। अतः संरचनात्मक विशेषीकरण के आधार पर राजनीतिक व्यवस्थाओं का विभाजन होता है।

आलोचना: इस उपागम की निम्न दोष हैं -

(i) इस उपागम पर परिवर्तन विरोधी होने के कारण आरोप लगाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि यह [illegible] समाज में

Oxford

परिवर्तन के स्थान पर यथास्थितिवाद के समर्थक हैं।

(ii) इस उपागम का प्रयोग आमण्ड ने किया है जो सार्वभौम तथा विकासशील देशों के इन आदर्शों में बैठते हैं। इससे तीसरी दुनिया के देशों का अध्ययन संभव नहीं है। यह उपागम 'पूर्वधारणा' पर आधारित है जो आधुनिक तीसरी दुनिया के देशों में 'पूर्वधारणा' का आभास पाया जाता है।

(iii) इस उपागम का मानना है यथास्थितिवाद का समर्थन करता है तथा तीसरी दुनिया में आधुनिकता का अभाव न हो।

(iv) आलोचकों का कहना है कि यह उपागम अमरीकी पूँजीवाद की रक्षा का प्रयास है।

(v) राजनीतिक व्यवस्था की प्रकार्यात्मक मान्यताओं की व्याख्या कठिन है।

निष्कर्ष : तुलनात्मक राजनीति के व्यवस्थित विश्लेषण में इस उपागम का महत्व कम नहीं हो जाता। आलोचना की दृष्टि से कठिनाई उत्पन्न करते हैं लेकिन तुलनात्मक राजनीति को परम्परागत जकड़नों से मुक्त कर एक नवीन व्यवहारात्मक अनुसंधान बनाने का श्रेय संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक परिप्रेक्ष्य द्वारा ही हुआ।

—x—

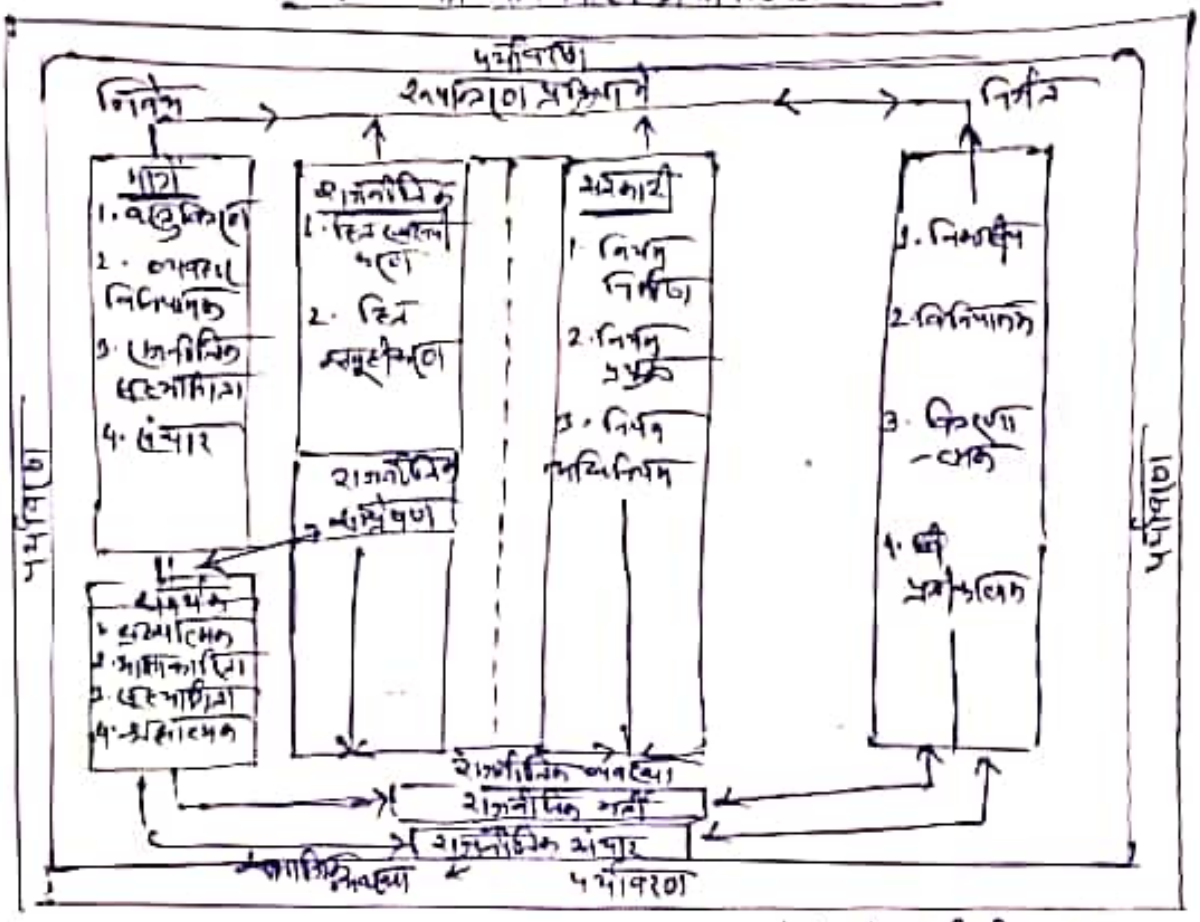

आमण्ड का संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक मॉडल

Girijesh Singh, Asst Professor
Dept : Political Science
R.N. College Pandaul, Madhubani
Class - Deg (Sub) Part - II
Topic : Structural functional approach
Date : 05/03/2020